शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2013

डॉ अम्बेडकर की लेखनी में दलित और यहूदी

नानक चन्द (शोधार्थी), *डॉ के पी सिंह* (डीन इतिहास और सामाजिक विज्ञान),
इतिहास और सभ्यता विभाग
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
ग्रेटर नोएडा, उत्तरप्रदेश

शोध संक्षेप

इतिहासकार तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर अतीत का वर्णन करता है ठीक उसी तरह डॉ अम्बेडकर ने अपने तर्कशील विचारों और सिद्धांतों के द्वारा भारतीय समाज में फैली अस्पृश्यता की बीमारी को जनमानस के पटल पर लाकर खड़ा कर दिया। डॉ अम्बेडकर समतामूलक और जातिविहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे जिससे देश विकास की ओर अग्रसर हो सकें। डॉ अम्बेडकर ने कहा था यदि तालाब में कोई कुत्ता तैर जाये तो हिंदुओं को कोई आपति नहीं थी यदि कोई पक्षी उसमें बीट कर जाए तो उससे यह तालाब अपवित्र नहीं होता था और यदि कोई अछूत इसका पानी पी ले तो तालाब को अपवित्र मान लिया जाता था, लेकिन डॉ अम्बेडकर बताते हैं कि यहूदी अपनी कथनी और करनी के खुद जिम्मेदार थे दलित नहीं। इस शोध पत्र के द्वारा डॉ अम्बेडकर की लेखनी में दलितों और यहूदियों के शोषण और संघर्ष पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया हैं।

प्रस्तावना

डॉ अम्बेडकर अछूतों के सबसे बड़े उद्धारक थे। इनकी उपमा इज़राइल के मूसा से की जाती है। जिसने अपने लोगों को दासता और गुलामी की जंजीरों से मुक्त करा स्वाधीनता दिलाई थी। डॉ भीमराव अम्बेडकर पर जॉन डीवीए, गौतम बुद्ध, ज्योति बा फुले और कबीरदास जी के विचारों का अत्यन्त प्रभाव पड़ा। किसी समय के गवर्नर लार्ड कैले ने कहा थाए कि वे बुद्धि और ज्ञान के स्त्रोत थे। जिस समय डॉ अम्बेडकर दलितों के लिए संघर्ष कर रहे थे, उस समय संसदीय प्रजातंत्र के विरुद्ध इटली, जर्मनी, रूस और स्पेन में विद्रोह चल रहे थे। डॉ अम्बेडकर पहले दलित नेता थे जिन्होंने वर्ण व्यवस्था और मनु स्मृर्ति की खुलेआम धज्जियाँ उड़ाई और जातिवाद, ब्राह्मणवाद, रूढ़ीवादी परम्पराओं और सामाजिक कुरीतियों का खुलकर विरोध किया। इसके साथ-साथ उन्होंने दलितों को स्कूल में प्रवेश का अधिकार, मंदिरों में प्रवेश का अधिकार, सार्वजनिक जल संसाधनों के उपयोग का अधिकार, समाज में अपनी बात रखने का अधिकार, संसद में दलितों को अपनी मांग रखने का अधिकार, नौकरियों में आरक्षित सीटों का अधिकार आदि मौलिक अधिकार दलितों को दिलाने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ अंबेडकर दलितों के ही नहीं पिछडों, मजदूरों और स्त्रियों की भी उम्मीद की किरण बने। उन्होंने कहा था कि पंश्चिम का लोकतंत्रए समानता और स्वाधीनता का सिद्धांत ही हमारे अछूतों का उद्धार कर सकता है।

उद्देश्य

इस शोध पत्र के द्वारा यह प्रकाश डालने का

प्रयास किया गया है कि डॉ अंबेडकर ने यहूदियों पर कुछ लिखा है तो क्या लिखा है ? डॉ अंबेडकर की लेखनी में यहूदी किस रूप मे मिलते है ? दलित यहूदियों से क्या सीख सकते है ? अश्वेतों के संघर्ष की तुलना में यहूदियों का संघर्ष दलितों के लिए कितना लाभदायक है ? उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर अम्बेडकर के द्वारा लिखित साहित्य, उनके भाषणों, क्रियाकलापों और डॉ अंबेडकर पर लिखी गयी लेखनियों से ढूंढ कर शोध पत्र का प्रायोजन करने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रक्रिया

उपलब्ध प्राथमिक और द्वितीयक शोध स्रोतों की पुस्तकें, अनुवादित पुस्तकें, एनसाइक्लोपीडिया, इयर बुक्स, संपादित ग्रंथ, पुस्तकें, शोध ग्रंथ, शोध पत्र, इंटरनेट माध्यम से प्रस्तुत शोध प्रारूप के अनुसार शिक्षाविदों द्वारा लिखी गयी लेखनियों का समुचित अध्ययन करके और उनके विचारों, कार्यों का विश्लेषण करके पूर्व वर्णित प्रश्नों का उत्तर ढूंढने का प्रयास किया गया हैं ।

कोलम्बिया विश्वविधालाय में उच्च शिक्षा के दौरानए एक विधवा यहूदी महिला ने डॉ अम्बेडकर की काफी सहायता की जिसका नाम फनी क्रिस्टीयल था, जो हाउस ऑफ कामन्स में काम करती थी। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में रोबर्ट जे.मोफल्ल डॉ अम्बेडकर के घनिष्ठ मित्र थे, इन्होने भी डॉ अम्बेडकर की काफी सहायता की थी। मिस ड्रेस्स्लर ने भी डॉ अम्बेडकर को काफी नई किताबें खरीदकर पढ़ने के लिए दी। आईए जेकिएल एक यहूदी पत्रकार था जिसने डॉ अम्बेडकर और उनके आन्दोलन को आगे बढाने में महत्तवपूर्ण योगदान दिया। एस.एस.रेगे जो सिद्धार्थ कॉलेज में पुस्तकालय ऑफिसर थे इन्होने डॉ अम्बेडकर की पुस्तकों को प्रकाशित कराने में काफी सहयोग किया था। डॉ अम्बेडकर की विचारधारा समानता, स्वतन्त्रता और भाईचारा के सिद्धांतों पर आधारित थी। डॉ अम्बेडकर पर जॉन डीवीए सेलेगमेनए केन्नेन, गौतम बुद्ध, कबीर, चोखमेला, ज्योति बा फूले, रविदास और नंदनार के विचारों का भी अत्यन्त प्रभाव पड़ा और इन्हीं के विचारों ने आग में घी डालने का काम किया। **1**

मै यहाँ दलितों और यहूदियों के संघर्ष में समानताओं और असमानताओं पर प्रकाश डालने जा रहा हूँ। यहूदियों के प्रति ईसाइयों की सोच का उद्दाहरण देकर स्पष्ट किया जा सकता है कि हिंदुओं की तरह ईसाईं भी यह नहीं मानते कि यहूदियों की समस्या असल में ईसाइयों की समस्या है। यहूदियों की समस्या असलियत में किस तरह की समस्या है इस पर लुईएस गोल्डिंग बताते है

हम देखते है कि यहूदियों की समस्या और दलितों की समस्या एक जैसी है। एक बात है कि यहूदियों की समस्या और ईसाई समस्या एक दूसरे के विरोधी है। यहूदी और ईसाई अपनी प्रजाति के एक दूसरे के शत्रु होने के कारण एक दूसरे से अलग कर दिये गए है। यहूदी लोग ईसाइयों के विरुद्ध है। हिन्दू और दलित इस प्रकार की शत्रुता के कारण एक.दूसरे से अलग नहीं है। उनका एक ही धर्म है और उनके एक जैसे रीति-रिवाज है। **2**

ऐसा कम लोग ही कहते है कि हमे स्पृश्य हिंदुओं को बदलने के लिए कुछ करना चाहिए और यह धारणा आज भी बनी हुई है कि अगर सुधार होना है तो वह अस्पृश्यों का ही होना है अगर कुछ किया जाना है तो वह अछूतो के प्रति ही किया जाना है, सवर्णो के बारे में कुछ नहीं किया

जाना है जिस तरह से दलित हिंदुओं से अलग रहना चाहते है उसी तरह यहूदी भी ईसाइयों से अलग-अलग रहना चाहते है। इन तथ्यों में से पहले तथ्य अर्थात यहूदियों और ईसाइयों में वैर भाव का आधार यहूदियों की अपनी प्रजाति के प्रति कट्टर भावना है और दूसरा तथ्य ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित लगता है। प्राचीनकाल में ईसाइयों ने यहूदियों को अपने साथ मिलाने के कई प्रयत्न किए लेकिन यहूदियों ने सदैव इसका विरोध किया। पहली घटना नेपोलियन के शासनकाल की है, जब फ़्रांस की राष्ट्रीय असेम्बली इस बात के लिए सहमत हो गई कि यहूदियों के लिए मानव अधिकार घोषित किए जाए तब अलसाके के व्यापारी संघ और प्रतिक्रियावादी पुरोहितों ने यहूदी प्रश्न को फिर उठाया। इस पर नेपोलियन ने इस प्रश्न को यहूदियों को उनके द्वारा ही विचार करने के लिए सौंपने का निर्णय लिया। उसने फ़्रांस, जर्मनी और इटली के प्रमुख यहूदी नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया ताकि इस बात पर विचार किया जा सके कि क्या यहूदी धर्म के सिद्धांत नागरिकता प्राप्त करने के लिए आवश्यक शर्तों के अनुरूप है या नहीं। नेपोलियन यहूदियों को बहुसंख्यकों के साथ मिला देना चाहता था। यह सम्मेलन २५ जुलाई १८०६ में पेरिस के टाऊनहाल में हुआ जिसमे बारह प्रश्न विचारार्थ रखे गए थे। ये प्रश्न मुख्य रूप से यहूदियों में देशभक्ति की भावनाए यहूदियों और गैर.यहूदियों के बीच विवाह होने की संभावना और इसकी कानूनी मान्यता से संबंधित थेए ९ फ़रवरी १९०७ की बैठक में सभी यहूदियों को आह्वान किया गया कि ईसाई और यहूदी आपस में विवाह संबंध स्थापित कर सकते है लेकिन ये विवाह संबंध यहूदियों की धार्मिक महासभा द्वारा नहीं स्वीकृत किये जा सके। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यहूदियों ने अपने और गैर.यहूदियों के साथ विवाह संबंध होने की स्वीकृति नहीं दी। उन्होंने उन संबंधो के विरुद्ध कुछ भी कार्यवाही न करने के बारे में नाराजगी थी।

ईसाइयों के स्पष्टीकरण को चाहे कुछ भी समझा जाये लेकिन यहूदियों के प्रति उनका व्यवहार गैर मानवीय नहीं रहा है लेकिन हिंदुओं ने दलितों के साथ अपने व्यवहार के औचित्य को प्रमाणित करने की बात तो कभी सोची ही नहीं। वे यह भी नहीं कह सकते कि कोई व्यक्ति समाज में इसीलिए दलित है कि क्योंकि वो कोढ़ी है या वह घिनौना लगता है और यह भी नहीं कह सकते उनके और दलितों के बीच में कोई धार्मिक वैर है, जिसकी खाई को पाटा नहीं जा सकता। वे यह भी तर्क नहीं दे सकते है कि दलित स्वयं हिंदुओं में घुलना-मिलना नहीं चाहते थे।3 दलितों को जिस तरह से भारत में अपने सामाजिकए राजनीतिक, शैक्षणिक और धार्मिक अधिकारों से वंचित रखा गयाए सवर्ण और मनुवादियों द्वारा दलितों को नीबू की तरह निचोड़ा गया, ठीक उसी तरह यहूदियों को भी जर्मनीए पोलैंड रोम और अमेरिका में प्रताड़ित किया गया। रोम ने इज़राइल पर आक्रमण किया और इस भीषण युद्ध में हजारों यहूदी मारे गए और बाद में नरसंहार हुआ। रोम ने दो शताब्दियों तक यहूदियों का शोषण किया और इसके बाद १३५ ईस्वी में रोम के सम्राट हद्रीयन ने येरूसलम के यहूदियों को एक एक करके कत्ल करवा दिया और यहाँ तक कि उनकी एक एक ईट गिरवा दी और समस्त भूमि पर हल चलाकर बराबर कर दी। इन अत्याचारों से यहूदी सारे संसार में

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2013

बिखर गए और जर्मनी में हिटलर ने ६० लाख यहूदियों का बर्बरतापूर्वक कत्ल करवा दिया और एक-एक यहूदी को ढूंढ-ढूंढ कर मारा गया। १९वी सदी के अंत में जब यूरोप में राष्ट्रीय आंदोलन और गैर विरोधी यहूदी आंदोलन बढ़ रहा था, उसी समय एक आस्ट्रियाई पत्रकार थियोडोर हेरजेल ने यहूदी लोगो के राष्ट्रीय आंदोलन को सुसंगठित किया और यहूदी लोगो के लिए एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। इज़राइल की ज़मीन पर इन्होने धीरे- धीरे अपने आपको सुसंगठित किया और शिक्षा के द्वारा अपनी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति का विकास किया और आज यहूदी किसी भी क्षेत्र में किसी से कम नहीं है। भारत में लगभग दस करोड़ अछूत हैं, जिनमें से प्रत्येक वर्ष चार से पाँच सौ के बीच कट्टर हिन्दू और मनुवादियों द्वारा अछूतों की हत्या कर दी जाती है और प्रत्येक दिन सैकड़ों अछूतों को बेरहमी से प्रताड़ित किया जाता है। कुछ अछूतो के घर ही जला दिये जाते हैं और कुछ अछूत महिलाओं के साथ बलात्कार भी किए जाते है और कुछ अछूतों के घरों के सामानों को लूट लिया जाता है लेकिन यह संख्या केवल सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक भेदभाव के अधीन नहीं है लेकिन फिर भी प्रतिदिन व्यक्तिगत उत्पीड़न और अपमान हो रहा है, वहीं जर्मनी में नाजियों द्वारा यहूदियों का नरसंहार किया गया और श्वेतों द्वारा अफ्रीका में अश्वेतों को प्रताड़ित किया गया और यह चर्चा की जाती है कि भारत में हिंदुओं द्वारा अछूतों को प्रताड़ित किया गया। अमेरिका में नीग्रो को प्रताड़ित करना, अफ्रीका में अश्वेतों को प्रताड़ित करना और जर्मनी में यहूदियों को प्रताड़ित किया जाना ये सभी प्रताड़नाएँ शोषण के स्वरूप को प्रदर्शित करती है । 4

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि ईसाइयों ने तो यहूदियों को अंतरजातीय विवाह करने के लिए अधिकार दे दिया था लेकिन यहूदी ईसाइयों से अलग रहना चाहते थे और ईसाई धर्म को अस्वीकार कर दिया लेकिन प्रश्न यह विदित होता हैं कि हिंदुओं और मनुवादियों ने तो अछूतों को कभी गले लगाने की बात तो सोची ही नहीं थी। अंतरजातीय विवाह करने की बात तो बहुत दूर थी जिस तरह सूर्य और पृथ्वी के बीच दूरी है ठीक उसी तरह हिंदुओं ने अछूतों को हिन्दू धर्म सामाजिक, आर्थिक, और धार्मिक अधिकारों से वंचित रखा। हिटलर ने 60 लाख यहूदियों का जर्मनी में नरसंहार किया, जिसमे 15 लाख बच्चो की जानें गयी। इस नरसंहार के लिए यहूदी स्वयं जिम्मेदार थे। लेकिन अछूत तो हिन्दू धर्म में विश्वास करते थे और हिंदुओं को अपनाना चाहते थे लेकिन ब्राह्मणो और मनुवादियों ने अछूतों को उनके अधिकारो से वंचित रखा और उन बेबस और निर्दोष लोगो को दर्दनाक यातनाएँ देकर उनकी मनोभावनाओं और आत्मस्वाभिमान को गहरी चोट पहुंचाई। अछूत हिन्दू धर्म का हिस्सा हैं लेकिन हिंदुवादी और सवर्णवादी भी अछूतो की भावनाओं और आत्म सम्मान पर कठोर प्रहार करते है।

मिश्र में इजरालियों का भाग्य, अमेरिका में अश्वेतों का जीवन और जर्मनी में यहूदियों की हालत अपने ही देश में भारत के अछूतों के जीवन की तुलना में बेहतर थी। सवर्ण और मनुवादियों ने अछूतों का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षणिक हर तरीके से शोषण किया। डॉ अम्बेडकर दलितों के ही मसीहा नहीं वरन स्त्रियों

और मजदूरों के नेता भी थे। उन्होंने बालविवाह, मूर्तिपूजा, विधवा विवाह, जातिवाद, अस्पृश्यता और वर्ण व्यवस्था का विरोध ही नहीं किया बल्कि ब्राह्मणों और मनुव्यवस्था की भी खुलेआम धज्जियां उड़ाई।2

डॉ अम्बेडकर भारतीय मजदूर संघ के नेता थे। उन्होंने घोषणा की कि यहूदियों के इलाज़ में पोलैंड की तरफ से कोई सहयोग नहीं था। जर्मनी ने युद्ध में यहूदियों पर दानवों की तरह प्रहार किया। जो राष्ट्र उनसे सहमत नहीं थे, उसी तरह वे भी सहमत नहीं थे अंग्रेजों की दर्दनाक प्रताड़नाओं से। उन्होंने भारतवासियों से कहा था कि हमे नए स्वामी को स्वीकार नहीं करना चाहिए और उन्होने ब्राह्मणवाद और मनुवादियों पर अपनी लेखनी और भाषणों का भयंकर प्रहार किया और दबे कुचले वर्ग को समानता और न्याय का अधिकार दिलाने पूरे जीवन प्रयास करते रहे और शेर की तरह दुश्मनों की छाती पर वार करते रहे। 5

कुछ यहूदियों को एक छोटे से कमरे मे बंद करके उसमे विषैली गैस छोड़कर मार दिया गया और हिटलर द्वारा एक एक यहूदी को ढूंढ कर मार डालने का आदेश दिया गया। यहूदियों की प्रताड्नाएँ दलितों के सामने कुछ भी नहीं है। दलितों का कभी चांडाल, हरिजन, दास, अछूत, और अस्पृश्य की उपलब्धि देकर शोषण किया गया लेकिन यहूदी तो अपनी कथनी और करनी के खुद उत्तरदायी है।

डॉ॰ अंबेडकर ने रोम में गुलामी के इतिहास का अध्ययन, अमेरिका में अश्वेतों और जर्मनी में यहूदियों के नरसंहार का गहन अध्ययन किया। इन्होने वाल्टर बगेहोट, जेम्स ब्रायके, जेन्निंग्स, पेण्ड्लेटोन हेररिंग, प्रो॰ ए॰बी॰ हार्ट, प्रो॰एल॰ टी॰ होभौसे, जॉन शोरे, प्रो॰ डिके, पोररित्तए प्रो॰ एच॰जे॰लास्की आदि उदार विद्वानों की कृतियों का गहन अध्ययन किया। दलितों को, सामंतवादी, जमीदारों और सूदखोरों की ताकतों ने दलितों की अस्मिता को गहरी चोट पहुंचाई। डॉ अम्बेडकर इस बात पर ज़ोर देते थे कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता से ज्यादा महत्वपूर्ण जनता की स्वतन्त्रता है, राजनीतिक लोकतन्त्र आज भी एक मज़ाक बन कर रह गया है। इस आधुनिक युग में डॉ अंबेडकर के आर्थिक विचारों को अपनाना ही होगा। गरीब जनता की समस्याओं का निदान सामाजिक और आर्थिक नीतियों के माध्यम से ही हो सकता है न कि पूंजीवादी आर्थिक नीतियों और बाजारीकरण के माध्यम से। 6

हिंदुओं और अछूतो के बीच परस्पर संबंध का अध्ययन करते समय यह प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है कि इतिहास में धर्म और नस्ल के आधार पर बने सेवक वर्ग के कई उदाहरण मिलते है। यहूदियों पर यह आरोप लगाया गया कि ईसा की मृत्यु यहूदियों के कारण हुई। मध्य काल में यूरोप के सभी शहरो में यहूदियों को सीमित क्षेत्र में रहने के लिए मजबूर किया करते थे और यहूदियों के निवास क्षेत्र घेट्टो कहलाते थे। 1050 में औस्ट्रालिया की कोएंजा में ईसाइयों की एक महासभा में घोषणा की गई कि कोई भी ईसाई किसी मकान में यहूदी और मूर लोगों के साथ नहीं रहेगा न उनके साथ भोजन करेगा और जो भी इस नियम को तोड़ेगा वह सात दिन तक प्रायश्चित करेगा और एक साल तक सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाएगा और कोई साधारण व्यक्ति यह अपराध करे तो उसे एक सौ कोड़े लगाए जाए। 1388 में एक नियम बनाया ईसाई उन घरों में न

रहे जो यहूदियों के लिए निर्धारित हैं। मध्य काल में यहूदी इकट्ठे होकर एक जगह स्नान करते थे और चौदहवी शताब्दी में औगर्स के यहूदियों को मोइन नदी में स्नान करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और राज्य द्वारा इन यहूदियों पर तीन कर लगाए गए : व्यक्ति कर, व्यक्तिगत लेनदेन और विशेषाधिकारों पर विशेष प्रकार का जुर्माना और शुल्क, किन्तु 1273 में इंग्लैंड की तरह स्पेन में भी दस साल की उम्र के यहूदियों को यह कर देना पड़ता था। 1215 में पोप इनोसेंट तृतीय ने एक फरमान जारी किया कि ईसाइयो से अलग उनकी पहचान के लिए यहूदी बाहर अपने कपड़ों पर एक बिल्ला लगाया करेंगे और 1525 में पोप क्लिमेंट सप्तम ने यह व्यवस्था कर दी कि यहूदी अब पीला हैट या बोननेट पहना करेंगे और अछूतों की मौजूदा स्थिति के दौरान किसी जमाने में इंग्लैंड के कैथोलिक ईसाइयो की स्थिति की याद दिलाने लगती है। 7
डॉ अम्बेडकर द्वारा की गई इस टिप्पणी से यह प्रतीत होता है कि ईसाई यहूदियों को ईसा की मृत्यु का जिम्मेदार मानते है और ईसाइयों ने यहूदियों से अलग रहना शुरू कर दिया, यहूदी ईसाइयों के साथ न तो भोजन कर सकते थे, न शिक्षा ग्रहण कर सकते थे और न मोइन नदी में स्नान कर सकते थे और यहूदियों को गाँवो और शहरों से बहिष्कृत कर दिया गया था और निवास स्थानों से दूर अलग बस्ती बनाकर रहने लगे थे। लेकिन यहूदियों को तो ईसा की मृत्यु का जिम्मेदार माना इसीलिए ईसाइयों और नाजियों ने उनका शोषण किया। लेकिन यहाँ यह ध्यान रखने वाली बात है कि अछूतों को किसकी मृत्यु का जिम्मेदार माना जाए जिससे हम कह सके कि अछूतों का इसीलिए शोषण किया गया कि वे भी किसी की मृत्यु के जिम्मेदार थे। इसीलिए ये तथ्य हमारा ध्यान आकर्षित करते है कि अछूतों को तो बिना किसी कारण के कुचला और दबाया गया आखिर ऐसा क्यो किया गया उन हिन्दूवादियों के द्वारा जिससे आज भी दलित समाज धरती पर कीड़े की तरह रेंग रहा है उनकी इस दशा के जिम्मेदार हिन्दूवादी और ब्राह्मण जिम्मेदार है।
अम्बेडकर बुद्ध धर्म मे गहन विश्वास रखते थे। उन्होंने अछूतों को संगठित किया और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना सिखाया। डॉ अम्बेडकर ने निष्कर्ष निकाला कि बुद्ध धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं रखता है और यह प्रगति और मार्गदर्शक के रूप में काम करेगा। लार्ड जीसस क्राइस्ट की शिक्षाओं और एकजुटता के द्वारा रोम के दास स्वतंत्र और शक्तिशाली बन गये। धर्म की शक्ति के द्वारा यहूदी भी बहादुर और संगठित हो गये थे, जो मूल मंत्र उन्हे मूसा ने दिया था। अरब की जन जातियों पर मुहम्मद के संदेशो का प्रभाव पड़ा और अपने आपको संगठित करना शुरू कर दिया था। तिब्बत, मंगोलिया और कोरिया बुद्ध धर्म से आकर्षित थे और ये लोग सभ्य थे। अछूतों ने भी अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना शुरू कर दिया और अंबेडकर ने बताया की बुद्धिज़्म ही अछूतों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे संसार को सामाजिक, धार्मिक और मनोवेज्ञानिक आवश्यकताओं और संतुष्टि प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन है। अम्बेडकर जी ने दलितों की दशा को सुधारने के लिए मानव अधिकारों को दिलाने में महत्व पूर्ण कदम उठाया और उन्होंने शोषितों और दबे कुचले वर्ग को अंधकार से बाहर निकालकर अपने

भाषणो और लेखनी के द्वारा दलित समाज को एक नयी दिशा प्रदान की। 8

संसार के अधिकांश देशों में ऐसे वर्ग हैए जो रोम में स्लेव या दास कहलाते थे। स्पार्टन में इनका नाम हालोटस या क्रीट था और ब्रिटेन में ये विलियम्स या क्षुद्र कहलाते थे। अमेरिका में नीग्रो और जर्मनी में यहूदी थे। हिंदुओं में यही दशा अछूतों की थी लेकिन इनमे से अछूत सबसे बड़े बदनसीब थे। दास, क्रीट, क्षुद्र सभी लुप्त हो गए है, परंतु छुआछूत का भूत आज भी मौजूद है और यह तब तक मौजूद रहेगा जब तक हिन्दू धर्म का अस्तित्व है। अछूतों की दशा यहूदियों से भी निम्न स्तर की थी। यहूदियों की दुर्दशा अपनी करनी के कारण है। अछूतों की दुर्गति के कारण नितांत भिन्न है। ये हिन्दूओं की साजिश के शिकार हैं। जो उनकी दुर्दशा के लिए बर्बर तत्वों से कम नहीं है। यही तिरस्कृत है परंतु उनकी तरक्की के रास्ते बंद नहीं कर दिये गए है। अछूत केवल तिरस्कृत ही नहीं है बल्कि उनकी तरक्की के सारे दरवाजे बंद है। फिर भी अछूतों की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। ६ करोड़ प्राणियों की अनदेखी की गयी। भारत में आज़ादी का जो कोलाहल मचा है उसमे यदि कोई हेतु है तो वह है अछूतो का हेतु। हिंदुओं और मुसलमानों की लालसा स्वाधीनता की अकांक्षा है यह तो सत्ता संघर्ष है, जिसे स्वतंत्रता बताया जा रहा है। मुझे लगता है की अछूतों की समस्या को फिर से भुला दिया जाएगा जैसा कि अब तक होता आया है, क्योंकि अछूत तो कष्ट भोग रहे है, चाहे उन्हें यहूदियों के कष्टो की तरह प्रचारित नहीं किया गया होए तो भी वे वास्तव में उनसे कम नहीं है। हिंदुओं द्वारा उनके दमन के जो तरीके अपनाए जाते है, वे भी कम नहीं। नाजियों ने यहूदियों के साथ रक्तपात किया, अछूतों के साथ इतना नहीं हुआ। नाजियों की यहूदियों के साथ समानता विरोधी रवैया अछूतों के प्रति बर्ताव से भिन्न नहीं है और सनातनियों द्वारा अछूतों के विरुद्ध जुल्म भी कम नहीं किए गए है। संसार के दलित लोगों की बेड़ियाँ काटकर उन्हें मुक्त करने के लिए दुनिया का जो कर्तव्य है, वही अछूतों के प्रति भी है। 9

उपर्युक्त कथनो के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि जिसके संदर्भ में गुलाम नीग्रो और यहूदियों की समस्या कुछ भी नहीं है। अगर उस समय जरूरत थी तो जनता को अपनी स्वाधीनता की जरूरत थी न कि सत्ता संघर्ष की, लेकिन गांधी जी ने देश पर शासन करने के लिए शोषित जनता की तरफ ध्यान न देकर सत्ता संघर्ष पर ध्यान दिया। जिसको कर के रूप में दलितों को आज भी भुगतना पड़ रहा है। अगर उस समय दलितों के लिए पृथक निर्वाचन की मांग मान ली होती तो आज दलितों की दशा कुछ और होती।

भारतीय समाज में जाति की अवधारणा का महत्वपूर्ण स्थान है। जन्म से लेकर मृत्यु तक जाति और जाति से संबन्धित मानसिकता और उसका वर्चस्व हमारा पीछा नहीं छोड़ता। जाति, उपजातियाँ छाया की तरह व्यक्ति और व्यक्ति समूह के साथ साथ चलती हैं। ऐसा भी माना जाता है कि आर्यों ने अपने रंगए रूप और शुद्धता को बचाने के लिए जातियों की रचना की और उन्हें ईश्वर निर्मित बतला दिया। डॉ अम्बेडकर ने अमेरिका की तीन तरह की जातियों का वर्णन किया है - गोरों की जाति, कालों की जाति और रेड इंडियंस की जाति। हिन्दुओं की तरह ईसाई भी यह नहीं मानते है कि यहूदियों की समस्या असल में ईसाइयों की समस्या है। इस विषय पर

गोल्डिंग की टिप्पणी इस स्थिति को और अधिक स्पष्ट करती है और यहूदियों की समस्या असलियत में किस तरह ईसाइयों की समस्या है और इसे बताते हुए वे कहते है, जिस अर्थ में में यहूदियों की समस्या को असलियत में ईसाई समस्या समझता हुए उसे स्पष्ट करने के लिए बहुत सीधी मिसाल देते है, मेरे ध्यान में मिश्रित जाति का एक आयरिश शिकारी कुत्ता आ रहा है। इसे मैं बहुत दिनों से देखते आया हूँ। यह मेरे दोस्त जॉन स्मिथ का कुत्ता है, नाम है पैड़ी। पैड़ी को स्कॉच शिकारी कुत्ते नापसंद है। इस जाति का कोई कुत्ता उसके आस-पास बीस गज की दूरी से भी नहीं निकलता सकता और कोई दिख भी जाता है तो वह भोंक-भोंक कर आसमान सिर पर उठा लेता है। उसकी यह बात जॉन स्मिथ को बुरी लगती है और उसे चुप करने का हर संभव प्रयत्न करता है, क्योंकि पैड़ी जिन कुत्तों से नफरत करता है, वे बेचारे चुपचाप रहते हैं और कभी पहले नहीं भोंकते। मैं सोचता हू कि पैड़ी की यह आदत जाति विशेष की होने पर उसके स्वभाव के कारण है। हमसे किसी ने यह नहीं कहा की यहा जो समस्या है, वह स्कॉच शिकारी कुत्ते की समस्या है और जब पैड़ी अपने आस-पास के किसी कुत्ते पर झपटता है जो बेचारा नित्य कर्म वगैरह के लिए जमीन सूंघ-सांघ रहा होता है, तब उस कुत्ते को क्या इसलिए मारना पीटना चाहिए कि वहाँ अपने अस्तित्व के कारण पैड़ी को हमला करने के लिए उकसा देता है।10

डॉ अम्बेडकर जब दलितों की सामाजिक और आर्थिक दशा का मूल्यांकन करते है तो वे दलितों के अंदर अपने भाषणों से चेतना जागृत करते है और कहते है कि हमे लगातार संघर्ष करते रहना चाहिए, क्योंकि बलि तो भेडो की दी जाती है शेरों की नहीं। हम देखते है कि यहूदी समस्या और अछूतों की समस्या एक जैसी है। यहूदियों की समस्या और ईसाई समस्या एक दूसरे के विरोधी है। यहूदी और ईसाई अपनी प्रजाति के एक दूसरे के शत्रु होने के कारण एक-दूसरे से अलग कर दिये गए है। यहूदी प्रजाति ईसाई प्रजाति के विरुद्ध है लेकिन हिन्दू और अछूत उस प्रकार की शत्रुता के कारण एक दूसरे से अलग नहीं है। उनकी एक ही प्रजाति है और उनके एक जैसे रीति-रिवाज है और दूसरी बात यह है कि यहूदी ईसाइयों से अलग.अलग रहना चाहते है। इन दो तथ्यों में से पहले अर्थात यहूदियों और ईसाइयों में वैर.भाव का आधार यहूदियों की अपनी प्रजाति के प्रति कट्टर भावना है और दूसरा तथ्य ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। प्राचीन काल में ईसाइयों ने यहूदियों के साथ मिलने के लिए कई प्रयत्न किए लेकिन यहूदियों ने इनका विरोध किया।

गांधी जी ने कहा था की छुहाछूत हज़ार मुख वाला साँप है और प्रत्येक में जहरीले दाँत है। नस्ल और जाति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अमेरिका में नस्ल के आधार पर कम भेदभाव दिखाई पड़ता है और भारत में जातीय स्तर पर अधिक छुआछूत है। यहाँ में कविता के द्वारा समझाने का प्रयास कर रहा हूँ -

मुझे बूढे व्यक्ति के गोरे बूढे पिता
और मेरी बूढी काली माँए
मेरे बूढे पिता एक बड़े तथा शानदार घर में मरें
मेरी बूढी माँ एक झोपड़ी में मरी
मुझे आश्चर्य होता है मैं कहाँ मरूँगा
मैं न तो गोरा हूँ न काला

वर्षों पहले बुकर टी वॉशिंग्टन ने अमेरिका में नस्ल की समस्या को पहचाना था। भारत में डॉ

अम्बेडकर ने जाति-व्यवस्था और जातिवाद की जड़ों को पहचाना था। यदि कोई अमेरिका और भारत से नस्लवाद और जातिवाद समाप्त करना चाहता है तो अमेरिका में श्वेत और अश्वेतों के साथ ही भारत में हिन्दू और दलितों के बीच भेदभाव कम करना होगा। इसीलिए यह कहने में कोई अतिशियोक्ति नहीं है कि अस्पृश्यता की समस्या प्रांचीन कल से चली आ रही है चाहे वो दास के रूप में हो, चांडाल के रूप में हो, हरिजन के रूप में, अछूत के रूप में हो और दलित के रूप में हो। भारत में जाति व्यवस्था को तोड़ना मुश्किल है, क्योंकि जो मानसिकता ५००० वर्षो से हमारे दिलो-दिमाग में बैठी है उसे इतनी जल्दी खत्म नहीं कर सकते। अमेरिका में नीग्रो का नस्ल के आधार पर शोषण किया जाता था लेकिन भारत में जाति, जाति व्यवस्था का वो छोटा सा अंकुर है जिसने दलितों की सामाजिक और धार्मिक जीवन में भूचाल खड़ा कर दिया और उनकी मनोभावनाओं और आत्मसम्मान को कुचल दिया। डॉ अम्बेडकर ने सदियों से चले आ रहे शोषण का आधार जातीय बताया है। डॉ अम्बेडकर की पुस्तक 'द अण्टौचबेल' का अध्ययन करने से विदित होता हैं वे अस्पृश्यता और जातिवाद का कडा विरोध करते है, क्योंकि जाति ही वह अभिशाप है जिसने सदियों से अपनी पकड़ जमाई हुई है। डॉ अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'मि॰ गांधी एंड द एमनसिपैशन आफ द अनटचेबल' की भूमिका में सम्पूर्ण समाज को चुनौती दी है। यह दायित्व इस दुनिया का है कि वह सभी पिछड़े लोगों के साथ दलितों की जंजीरें तोड़कर उन्हे स्वतंत्र करें। इस पत्र को डॉ अम्बेडकर ने १९४३ में पीस कांफ्रेस के लिए तैयार किया था। उन्होंने माना है कि अस्पृश्यता के सामने गुलामों, नीग्रोस और यहूदियों की समस्याएँ कुछ भी नहीं। हिंदुओं को दुनिया की अदालत के सामने जवाबदेह बनना पड़ेगा। डॉ अम्बेडकर ने अस्पृश्यता की समानता करते हुए लिखा है कि उनकी स्थिति यहूदियों से भी बदतर है। यहूदियों को तो अवसरों से ही वंचित किया गया, परंतु अस्पृश्यों को तो नफरत का शिकार होना पड़ा। इसका मतलब यह नहीं कि अस्पृश्यों को अवसर उपलब्ध नहीं थे पर नफरत के साथ। उनका यह भी मानना है कि देश की आज़ादी की लड़ाई मे आज़ाद होने का यदि किसी को अधिकार हैए तो अस्पृश्य वर्ग को है। हिन्दू के पास आचार संहिता है जो हिंदुओं को अनेक अधिकार देती है और अस्पृश्य के लिए अपमान ही अपमान है जो मानवीय जीवन की पवित्रता के विपरीत है। उन्होंने इस बात पर पूरा ज़ोर दिया है कि भविष्य के संविधान मे राजनीतिक ढांचे और सामाजिक ढांचे के बीच समानता का होना जरूरी है।

उपर्युक्त तथ्यो से यह पता चलता है कि जिस तरह बुकर वाशिंगटन ने अमेरिका में नस्ल की समस्या को समझा था और यहूदियों की समस्या को हज़रत मूसा ने समझा था और दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला ने समझाए ठीक उसी तरह दलितो के दुख, शोषण, दलहन, कुचलन को किसी ने नहीं समझा और आज आज़ादी के 65 वर्ष बाद भी सभी राजनैतिक पार्टियां दलितों के वोट बैंक पर टकटकी नज़र गड़ाये रहती हैं। दलितों पर अपनी राजनीति करती है और घोषणा करती है कि दलितो के लिए हम ये करेंगे, वो करेंगे, लेकिन इस लोकतान्त्रिक देश में आज भी दलितो का शोषण निरंतर बढ़ रहा है और आज यहूदी दलितो की अपेक्षा बेहतर है।

महत्व और उपयोगिता

भारत के विकास के मार्ग में जातिवाद हजारों वर्षो से एक विकराल समस्या रहीं है। लेकिन इस इंटरनेट के युग में निरंतर परिवर्तन अवश्य हुआ है। अगर जनता के मानसपटल पर भारतीय समाज में निहित अछूतपन की समस्या पर गहन अध्ययन करते हैं तो यह प्रतीत होता हैं कि अमेरिका की तरह हमारे यहाँ जब समलैंगिकता और लिव इन रिलेशन्शिप को मान्यता दी जा सकती है तो दलितों की समस्याओं को विश्व पटल पर रखा जा सकता हैं। आज देश के निर्माण के लिए जातिविहीन समाज की स्थापना करना ही होगी। यहूदी हर क्षेत्र में दलित से आगे हैं और हर क्षेत्र में सबसे आगे हैं। इसीलिए दलितों को भी शिक्षा को प्रथम वरीयता देनी चाहिए, जिससे दलित समुदाय यहूदियों की तरह जातिवाद और असमानताओं के जाल से बाहर निकल सके । यहूदियों को समाज में नस्ल की समस्या का शिकार होना पड़ा और दलितों को अस्पृश्यता की समस्या का शिकार होना पड़ा, लेकिन अंतर इस बात का था कि दलित अपनी स्वेच्छा से हिन्दूओं से अलग नहीं हैं बल्कि धर्मशास्त्रों के आधार पर उन्हे हिन्दू समाज का अंग नही माना गया। लेकिन यहूदी अपनी कथनी और करनी के खुद जिम्मेदार थे। यहूदियों की नस्ल की समस्या समाप्त हो गयी है, लेकिन भारतीय समाज में दलित समाज अस्पृश्यता की बीमारी से आज भी कुपोषित हैं। भारतीय समाज में निरंतर परिवर्तन हो रहा हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि जिस तरह यहूदियों की समस्या के लिए ईसाई उत्तरदायी हैं ठीक उसी तरह अस्पृश्यों की समस्या के लिए हिन्दू उत्तरदायी है। डॉ अंबेडकर ने अपनी लेखनी में उल्लेख किया है कि दलितों की समस्या के सामने यहूदियों की समस्या कुछ नहीं थी और यहूदी अपनी करनी के खुद जिम्मेदार थे। इस लोकतान्त्रिक देश में दलितों का वोट बैंक फ़ैशन बन गया है। आजादी के 65 वर्ष बाद भी भारत में खुलेआम दलितों पर अत्याचार और उनकी मनोभावनाओं को कुचला जाता है। जिस तरह हिंदूओं को अछूतों से नफरत थी उसी तरह यहूदियों की समस्या ईसाई थे। सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक अधिकार अछूतो के लिए उतने ही आवश्यक है जितना कि किसी जीव के लिए हवा, पानी और भोजन। डॉ अंबेडकर ने कहा था कि ईश्वर कहीं नहीं है, आदमी अपनी किस्मत स्वयं लिखता है, आखिर कब तक दलित समाज अपने भाग्य को कोसता रहेगा। यहूदियों की तरह दलितों को कडा संघर्ष करना चाहिए। वर्तमान में दलित समुदाय को समाज में समानता प्राप्त करने के लिए जरूरत हैं बौद्ध धर्म और शिक्षा को आत्मसात करने की, जिससे हिन्दू धर्म के प्रकोप से बचा जा सके और समाज को बाबा साहब के विचारों और सिद्धांतों से जोड़ा जा सकें ।

सन्दर्भ

1 धीर, डॉ सी, दा लीगेसी ऑफ डॉ अम्बेडर (भारत रत्न), 1990, बी आर प्रकाशक, पृष्ट 5

2 अम्बेडर, बाबा साहब, राईटिंग और स्पीच, वोल्यूम - 9, 1995, महाराष्ट्र सरकार, पृष्ट 1

3 अम्बेडर, बाबा साहब, राईटिंग और स्पीच, वोल्यूम - 9, 1995, महाराष्ट्र सरकार, पृष्ट 1

4 संघरक्षित, अम्बेडर और बुद्धिज़्म, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास, प्रथम संस्करण, 2006 5 कीर, धनन्जय, डॉ

अम्बेडर लाईफ एंड मिशन, मुम्बई : पापुलर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1962, पृष्ट 125

6 अम्बेडर, बी आर, मि.गांधी और अछूतों के उत्थान, सिद्धार्थ पब्लिशर्स, 1993, पृष्ट 1

7 अम्बेडर बाबा साहब, राईटिंग और स्पीच, बंबई, महाराष्ट्र सरकार, वोल्यूम 9, 1995, पृष्ट 25

8 अम्बेडर, बाबा साहब, डॉ आंबेडकर रेटिंग्स और स्पीचेस, वोल्यूम 17 महाराष्ट्र सरकार, 2000, पृष्ट - 3-4

9 नायक, सी डी, डॉ अम्बेडर के विचार और दर्शन, स्वरुप एंड सॉंस पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण, पृष्ट 224, 252, 374, 179, 241, 2003

10 नैमिशराय, मोहनदास, डॉ अम्बेडर और मार्टिन लूथर किंग का जीवन संघर्ष, नई दिल्ली, नीलकंठ पब्लिशर्स, 2000